



कोचीन सीमाशुल्क समाचार पत्रिका



Cochin Customs News Letter



श्री पुल्लेला नागेश्वर राव,
मुख्य-आयुक्त



श्री सुमित कुमार,
आयुक्त

CUSTOM HOUSE, COCHIN
CELEBRATES
CONSTITUTION DAY, 2018

Dr. B.R. Ambedkar
Prime Architect of Indian Constitution

हम भारत के लोग...
At enactment:
Preamble,
395 articles,
22 parts,
8 schedules
1,45,000 words

Justice Benegal Narsing Rao
Constitutional Adviser to the Constituent Assembly, authored the first draft

Rule of Law...
At present:
Preamble,
448 articles
25 parts
12 schedules
5 appendices
101 amendments

सम्पादक मण्डल

सुमित कुमार, भा. रा. से. - सीमाशुल्क आयुक्त

बी. जी. कृष्णन, भा. रा. से. - संयुक्त सीमाशुल्क आयुक्त

लखी नारायण दास, भा. रा. से. - सहायक सीमाशुल्क आयुक्त

मनोज कुमार - सीमाशुल्क अधीक्षक (निवारक)

किरण अय्यर वी. - कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

संपादकीय

सीमाशुल्क गृह, कोचीन के डिजिटल मासिक पत्रिका का छठा अंक आपके सामने प्रस्तुत है। इस पत्रिका द्वारा आम जनता को हमारे सीमाशुल्क गृह के भीतर और विभिन्न सीमाशुल्क स्टेशनों पर घटित हो रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी मिलती है जिससे वे अप्रत्यक्ष रूप से ही हमारे इस परिवार के अंग बन जाते हैं। साथ ही यह अधिकारियों/कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों की सृजनशीलता को उभारकर उन्हें एक मंच प्रदान करने का माध्यम भी है। पत्रिका वेब साईट, फेस बुक, ट्विटर तथा विभिन्न व्हाट्स एप ग्रुपों के माध्यम से हजारों लोगों तक पहुंचकर सराहनाएँ प्राप्त कर रही हैं।

इस माह में इस कार्यालय में हमारे मूलभूत अधिकारों के रक्षक तथा हमारे कर्तव्यों के बोधक संविधान के सम्मान में संविधान दिवस मनाया गया | दीपावली के पावन पर्व पर कार्यालय दीपों से जगमगा उठा। “ड्राइव थ्रू कंटेनर स्कैनर” के संबंध में लोगों के दिलों में भरी शंकाओं के समाधान के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया जो शंकाओं को निराधार सिद्ध करने में सहायक हुआ।

हमारी अपनी इस पत्रिका के विकास, प्रचार एवं प्रसार की ज़िम्मेदारी हम सभी की ही है। इसका निरंतर प्रकाशन आप सभी के सहयोग से ही संभव हो पाएगा। आपकी सृजनशीलता तथा आपका कौशल इस पत्रिका के विकास और विस्तार में सराहनीय भूमिका निभाएगी। ऐसी महती आशा के साथ आप सभी को नव वर्ष 2019 की ढेरों शुभकामनाएँ। पत्रिका में किसी भी प्रकार के सुधार हेतु आप सभी के सकारात्मक सुझावों का स्वागत है।

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित,

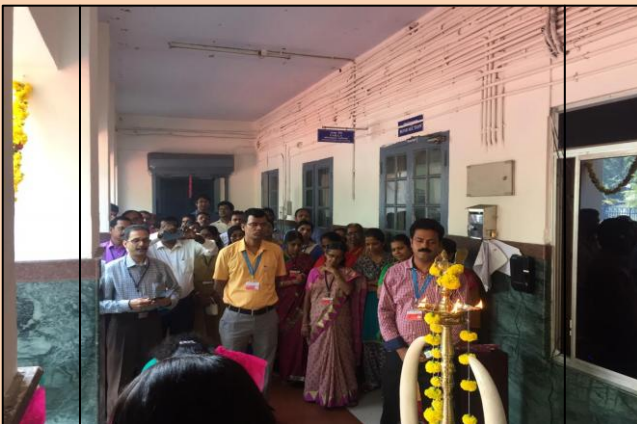
आपका,

सुमित कुमार, भा. रा. से.

आयुक्त

दीपावली उत्सव

सीमाशुल्क गृह, कोचीन में दीपों के त्यौहार दीपावली का आयोजन किया गया। अज्ञान रूपी तम से ज्ञान रूपी ज्योति की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देने वाले इस पर्व की आधारशिला ही 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' है। इस अवसर पर आयुक्त महोदय ने दीप प्रज्वलित किया एवं कस्टम हाऊस परिवार को दीपावली की शुभकामनाएं दी। कार्यालय में मिठाईयाँ बाँटी गईं एवं लोगों ने एक दूसरे को दीपावली की बधाईयाँ दी।



संविधान दिवस, 2018

(CONSTITUTION DAY, 2018)

सीमाशुल्क गृह, कोचीन-9 एवं सीमाशुल्क (निवारक) आयुक्तालय द्वारा संयुक्त रूप से में “संविधान दिवस” के अवसर पर दिनांक 26-11-2018 को संविधान एवं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित विषय पर एक प्रश्नोत्तरी (क्विज) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 12 टीमों ने भाग लिया। क्विज मास्टर के रूप में श्री बैजू डैनियल, मूल्यनिरूपक ने भूमिका अदा की।



प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का परिणाम (Result of Quiz Competition)

प्रथम पुरस्कार	श्री नितिन ए. एन.	निरीक्षक (परीक्षक)
	श्री रामनाथ पी.ए.	निरीक्षक (परीक्षक)
द्वितीय पुरस्कार	श्री प्रशांत चौधरी	निरीक्षक (केन्द्रीय उत्पाद शुल्क)
	श्री आसू सोरन	निरीक्षक (केन्द्रीय उत्पाद शुल्क)
तृतीय पुरस्कार	सुश्री मल्लिका कौशिक	निरीक्षक (केन्द्रीय उत्पाद शुल्क)
	श्री सूरज गुप्ता	निरीक्षक (केन्द्रीय उत्पाद शुल्क)

समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. वी. आर. जयदेवन (प्रोफेसर, NUALS) उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता श्री सुमित कुमार, आई.आर.एस., सीमाशुल्क आयुक्त ने की। स्वागत भाषण संयुक्त आयुक्त, श्री अनीष पी. राजन, आई.आर.एस. ने दिया जबकि धन्यवाद ज्ञापन श्री मोयदीन नैना, सहायक आयुक्त ने किया। इस अवसर पर क्विज प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया एवं सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया गया।





कोफेपोसा सलाहकार बोर्ड (COFEPOSA ADVISORY BOARD) के 20 से 22 सितम्बर, 2018 के दौरान तिरुवनंतपुरम आने के अवसर पर निम्न अधिकारियों को उस दौरान किए गए उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह समापन समारोह, 2018

(Vigilance Awareness Week Valediction Function, 2018)

सतर्कता जागरूकता सप्ताह दिनांक 29 अक्टूबर 2018 से 3 नवंबर 2018 के बीच मनाया गया। इस वर्ष का थीम था- “भ्रष्टाचार मिटाओ - नया भारत बनाओ” (Eradicate Corruption - Build a New India.)। सीमाशुल्क गृह, एयरपोर्ट, सभी सी.एफ.एस. एवं वल्लारपाडम में इससे संबंधित बैनर लगाए गए। इस अवसर पर भ्रष्टाचार के विरुद्ध विभिन्न प्रकार के जागरूकता संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सीमाशुल्क गृह, कोचीन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई गई एवं उनके लिए निबंध प्रतियोगिता एवं नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कुछ स्कूल/कॉलेज के छात्र-छात्राओं के लिए पोस्टर डिजायनिंग एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के समापन समारोह का आयोजन दिनांक 1 नवंबर 2018 को किया गया। इस अवसर पर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में टाइम्स ऑफ इंडिया के संपादक, श्री मनोज के. दास एवं केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री एन. नागेश उपस्थित थे। इसके अलावा श्री पुल्लेला नागेश्वर राव, मुख्य आयुक्त एवं श्री सुमित कुमार, आयुक्त ने भी मंच की शोभा बढ़ाई।



प्रतियोगिताओं के परिणाम

सीमाशुल्क अधिकारियों/ कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताएँ

निबंध लेखन प्रतियोगिता (Essay Writing Competition)

स्थान	नाम	पद
प्रथम पुरस्कार	श्री समरजीत झा	सीमाशुल्क अधीक्षक (निवारक)
द्वितीय पुरस्कार	श्री मनोज कुमार	सीमाशुल्क अधीक्षक (निवारक)

नारा लेखन प्रतियोगिता (Slogan Writing Competition)

स्थान	नाम	पद
प्रथम पुरस्कार	श्रीमती एन. ललिता	सीमाशुल्क अधीक्षक (निवारक)
द्वितीय पुरस्कार	श्री सत्यपाल मीणा	निरीक्षक (निवारक अधिकारी)

कॉलेज के छात्र/छात्राओं के लिए

पोस्टर डिजायनिंग प्रतियोगिता

स्थान	नाम	पाठ्यक्रम
प्रथम पुरस्कार	श्री अल्ताफ राजा	बी.बी.ए. तृतीय वर्ष
द्वितीय पुरस्कार	सुश्री अमृता लक्ष्मी	बी.एस.सी. (गणित) प्रथम वर्ष
	श्री रैजा पी एम	बी.एस.सी. प्राणिविज्ञान द्वितीय वर्ष

सीमाशुल्क कैडेटों/सीमाशुल्क कैडेट कॉर्प्स परियोजना के अंतर्गत आने वाले 6

स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिताएँ

निबंध लेखन (मलयालम) प्रतियोगिता

स्थान	नाम
प्रथम पुरस्कार	राहुल सुनील
द्वितीय पुरस्कार	मिलन जोस
तृतीय पुरस्कार	श्रीलक्ष्मी अनिल

निबंध लेखन (अंग्रेजी) प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	मैन्यूअल जोसेफ़
द्वितीय पुरस्कार	अतुल विजय
तृतीय पुरस्कार	मिथुन सजू



सीमाशुल्क गृह, कोचीन की समाचार-पत्रिका के 5वें अंक (अक्टूबर माह) का लोकार्पण डॉ. वी. आर. जयदेवन, (प्रोफेसर,NUALS) के करकमलों से संविधान दिवस के अवसर पर दिनांक 26 नवंबर 2018 को किया गया। इस मौके पर सीमाशुल्क आयुक्त, श्री सुमित कुमार एवं संयुक्त सीमाशुल्क आयुक्त श्री अनीष पी. राजन भी उपस्थित थे।



श्री ई. ए. बाबू, मूल्यनिरूपक के नवम्बर माह में सेवानिवृत्त होने पर उनके विदाई समारोह की कुछ झलकियां। इन्हें आगामी जीवन की ढेर सारी शुभकामनायें।



स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत



- मनोज कुमार,
सीमाशुल्क अधीक्षक (निवारक),
कस्टम हाऊस, कोचीन-9

**“ सभी रोगों की एक दवाई
आस-पास रखो साफ सफाई”**

जहां स्वच्छता है, वहीं स्वास्थ्य है। जहां स्वास्थ्य है, वहां विकास और प्रगति है क्योंकि एक स्वस्थ समाज के सदस्य ही एक बेहतर मानव संसाधन हो सकते हैं और राष्ट्र के विकास में सहयोगी भी। साथ ही यदि समाज में स्वास्थ्य का स्तर बेहतर नहीं रहता है तो स्वास्थ्य सुविधाओं पर राजस्व का एक बड़ा हिस्सा व्यय करना पड़ता है।

गाँधीजी स्वच्छता को स्वतंत्रता से ज्यादा तरजीह देते थे। हम आज राजनीतिक रूप से आजाद जरूर हैं लेकिन चारों ओर गंदगी का साम्राज्य हमें अभी भी घेरे हुए है। यह देखकर गाँधीजी की आत्मा जरूर दुःखी होती होगी।

**“बापू हम आज शर्मिंदा हैं
क्योंकि हमारा देश अभी भी गंदा है”**

वर्तमान में स्वच्छता को लेकर एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन चल रहा है और यह खुशी की बात है कि इसका आगाज़ राजनीतिक क्षेत्र से हुआ है। सरकार ने इस साफ-सफाई आंदोलन को महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न से जोड़ा है क्योंकि महात्मा गांधी इस बात पर बहुत बल देते थे कि मनुष्य साफ-सफाई का काम स्वयं करे और जो सफाई नहीं करता वो पाप करता है।



गांधी जी का कहना था “किसी परिवार के सदस्य खुद के घर को तो साफ रखते हैं लेकिन उन्हें पड़ोसी के घर के बारे में कोई रूचि नहीं होती।” स्वच्छ भारत अभियान का लक्ष्य 2019 तक (गाँधीजी की 150वीं जयंती) हर गांव, शहर, कस्बे को स्वच्छ बनाना, पक्के टॉयलेट, पीने का साफ पानी, कचरा निपटाने की ठोस व्यवस्था करना है। गांधीजी के चश्मे के गोलाकार फ्रेम में लिखा स्वच्छ भारत इस अभियान को और भी आकर्षक बना देता है।

स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य ही स्वच्छता के प्रति जनजागरूकता फैलाना है और इसका यह प्रमाण है कि आज हमलोग कम-से-कम इस विषय पर निबंध के जरिये जागरूकता फैलाने की कोशिश कर रहे हैं।

साफ-सफाई मानव स्वास्थ्य पर सीधा असर डालती है। स्वच्छता की शुरुआत अपने घर से होती है। सभी को शुरू से ही अपने व्यवहार में स्वच्छता से संबंधित कुछ आदतें डालनी चाहिए, कुछ इस प्रकार हैं -

- क) खाना खाने एवं बनाने से पहले एवं शौच के बाद हाथ साबुन से अच्छी तरह कम-से-कम 20 सेकंड तक अवश्य धोना चाहिए। साबुन की कुछ बूंदें अपनी हथेली पर गिराकर उन्हें झट-से टॉटी के नीचे धो डालना काफी नहीं है।
- ख) टूथब्रश को वाशरूम से दूर रखें क्योंकि टॉयलेट को फ्लश करने के 2 घंटे बाद तक पूरे वाशरूम में जीवाणु तैरते रहते हैं।
- ग) फल-सब्जियां इत्यादि बिना अच्छी तरह धोये कभी नहीं खाना चाहिए।
- घ) गंदे बर्तनों को साफ करने के बावजूद सिंक में कितने सारे जीवाणु रह जाते हैं। जो जीवाणु आपके सिंक में पैदा होते हैं, वे आपके हाथों, बर्तन साफ करने वाले स्पंज या स्कर्ब और इससे भी बदतर आपके भोजन के संपर्क में आ सकते हैं इसलिए दिन में एक बार अपने सिंक को ब्लीच व पानी से अच्छी तरह से धोएं और उसे सूखने दें। इससे जीवाणु भी खत्म हो जाएंगे।
- ङ) घर में या घर के आसपास पानी को ठहरने न दें मसलन फूलदानों, पालतू जानवरों के पानी रखने के बर्तनों आदि में। कूलर का पानी सप्ताह में एक बार अवश्य बदलना चाहिए।
- च) कूड़ा हमेशा कूड़ेदानी में ही डालें एवं बायो-डिग्रेडेबल एवं डिग्रेडेबल कूड़े को अलग-अलग कूड़ेदान में डालनी चाहिए।

मलेरिया, डेंगू, डायरिया, टीबी जैसी बीमारियां केवल साफ-सफाई न रखने से फैलती है। स्वच्छ आदतें रखकर हम कई बीमारियों से बच सकते हैं।

महिलाओं एवं युवतियों को मासिक-धर्म (पीरियड) के समय काफी स्वच्छता बरतने की जरूरत है। ऐसा देखा जाता है कि कई महिलायें मासिक-धर्म के समय सैनिटरी नैपकिन्स की जगह पुराने गंदे कपड़े का इस्तेमाल करती हैं जोकि गलत

है। आंकड़ों पर गौर करें तो अभी भी भारत में 12 से 15 प्रतिशत महिलाएं ही सैनिटरी नैपकिन का इस्तेमाल करती हैं जो एक चिंताजनक विषय है। मासिक धर्म के समय साफ-सफाई न बरतने से कई तरह की बीमारियां हो सकती हैं जिसमें उनके आजीवन बांझ बनने तक का खतरा शामिल है। अभी हाल ही में श्री **अरुणाचलम मुरुगनाथम** के रियल लाइफ स्टोरी पर बनी हिंदी फिल्म “ **पैंडमैन** ” में इस बात पर प्रकाश डाला गया है। ग्रामीण इलाकों में प्रसव के बाद महिलाओं को जिन अस्वच्छ परिस्थितियों में रखा जाता है उससे कई बार जच्चा-बच्चा की जान भी चली जाती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में सबसे बड़ी समस्या लोगों का **खुले में शौच** करना है। इसके सबसे ज्यादा भुक्तभोगी महिलायें होती हैं क्योंकि इसके लिए उन्हें सुबह जल्दी उठने या शाम को अंधेरा होने का इंतजार करना पड़ता है। शौच को रोक कर रखने से कई तरह की बीमारियां भी होती हैं और कई बार बहू-बेटियों के साथ छेड़खानी/बलात्कार तक की घटनायें देखने को मिलती हैं। जिनके घरों में शौचालय है उनमें से एक या दो व्यक्ति भी खुले में शौच के लिए इसलिये जाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि बाहर शौच जाने से उन्हें स्वच्छ और खुली हवा में टहलने के लिए मिल जाएगा। अतः शौचालय बनाने के साथ-साथ उसका प्रयोग करने की आदत डालना भी जरूरी है। “ घर में तो बहू का घूँघट भी सरकाना गँवारा नहीं और खुले में शौच। इस तरह से सोचने की जरूरत है, जहाँ सोच वहाँ शौचालय। ” खुले में यत्र-तत्र शौच करने से उस पर मक्खियाँ बैठती हैं और फिर वही मक्खियाँ हमारे खाने पर बैठती हैं जिससे बिमारियां फैलती हैं।

समाज को स्वच्छ रखना किसी एक व्यक्ति या सरकार की ज़िम्मेदारी नहीं है इसके लिए हर व्यक्ति का सहयोग जरूरी है। आज हमलोग अपने घर की सफाई के प्रति ध्यान देते हैं लेकिन घर का कूड़ा बाहर फेंककर अपनी ज़िम्मेदारी को खत्म समझ लेते हैं। समस्या यहीं से खड़ी होती है। हर व्यक्ति में नकल करने की आदत होती है यदि एक व्यक्ति किसी जगह पर कूड़ा फेंकता है तो दूसरा व्यक्ति

भी उस जगह पर कूड़ा डालता है। लेकिन यदि हर व्यक्ति वही कूड़ा कूड़ेदानी में जाकर डालता है तो फिर सभी कूड़ेदानी में ही डालते हैं। इस प्रकार एक अच्छी आदत विकसित होती है और यत्र-तत्र गंदगी नहीं फैलती है। हमें पॉलिथीन का कम-से-कम प्रयोग करना चाहिए। कुछ लोग खुले में पॉलिथीन एवं कूड़े को जलाते हुए देखे जाते हैं। पर्यावरण के लिए ऐसा करना बिल्कुल लाजिमी नहीं है। यदि हवा स्वच्छ नहीं होगी तो यह हम सभी के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालेगा। अतः इसके लिए हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए क्योंकि वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं एवं ऑक्सीजन छोड़ते हैं। अतः वृक्ष जितने अधिक होंगे वायु में ऑक्सीजन की मात्रा उतनी ही अधिक एवं कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा उतनी ही कम होगी। कार्बन डाइऑक्साइड ग्लोबल वार्मिंग में सबसे अहम भूमिका निभाता है जिससे धरती का तापमान बढ़ रहा है एवं स्वास्थ्य संबंधी कई समस्याएं पैदा हो रही हैं।

सबसे अधिक बीमारियां प्रदूषित जल से ही होती हैं। अतः पीने के लिए स्वच्छ फिल्टर किया हुआ या उबला हुआ पानी ही प्रयोग करना चाहिए। जब तक स्वच्छता अभियान में लघु जल स्रोतों जैसे छोटी नदी, तालाब, ताल, पोखरे, कुएं, जोहड़ इत्यादि को शामिल नहीं किया जाएगा, तब तक स्वच्छता की बात ही बेमानी होगी। सरकारी व्यवस्थाएं तो आवश्यक कदम उठाएंगी ही, लेकिन इन जल स्रोतों को बचाने और इनको पुनः स्वरूप देने के लिए सामाजिक भागीदारी सबसे अधिक आवश्यक है। अपने शहर, कस्बों और गांवों में मौजूद इन जल स्रोतों को बचाने के लिए सबसे पहले इनमें नाले और गंदगी को जाने से रोकने का प्रयास करना चाहिए। तालाबों में पशुओं को धोने एवं कपड़े साफ करने पर भी रोक लगानी चाहिए। साथ ही सरकारी तंत्र पर सामूहिक दबाव से प्रयास करने की जरूरत है। उसके बाद सामुदायिक भागीदारी के तहत इन जल-स्रोतों का सौंदर्यीकरण करते हुए, इस स्थान को अपने सामाजिक कार्यक्रमों में अधिक से अधिक शामिल करना चाहिए। इस मामले में बंगाल के गांवों में सामुदायिक भागीदारी से बने तालाबों का उदाहरण लिया जा सकता है। जहां तालाब को ग्रामीण समाज की जिम्मेदारी पर डाला गया है।

मानव स्वभाव के अनुरूप हम यह देखते हैं कि जहां भी गन्दगी फैलाने पर दंडात्मक व्यवस्था है वहाँ डर की वजह से लोग गन्दगी नहीं फैलाते और जहां ऐसी व्यवस्था नहीं है वहाँ गन्दगी का अम्बार लग जाता है। इसका एक साधारण उदाहरण दिल्ली मेट्रो रेल में देख सकते हैं। यहाँ थूकने पर 200 रुपये का जुर्माने का प्रावधान के साथ-साथ इसकी कड़ी निगरानी भी है तो वहाँ कोई नहीं थूकता, लेकिन वहीं भारतीय रेलवे में इस तरह की व्यवस्था नहीं होने के कारण गन्दगी बुरी तरह से फैली है। यह हमारी दोहरी मानसिकता का परिचायक है। क्या हम केवल डर से गंदगी को फैलाते या रोकते हैं ? हम सिंगापुर एवं अन्य देशों का उदाहरण देखते हैं कि वहां पर भी गंदगी फैलाने पर भारी जुर्माना लगता है इसकी वजह से ऐसे देशों में अधिक सफाई है। देश के सभी लोगों को इस दिशा में अपनी सोच बदलने की जरूरत है, तभी स्वच्छ भारत की परिकल्पना साकार हो सकती है।

स्वच्छ भारत का सपना साकार करने के लिए हम सभी को अपनी सोच में बदलाव लाने की जरूरत है। हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि कचरा कम-से-कम निकले। विभिन्न उत्पादों की पैकेजिंग करने वाली कंपनियों को भी ध्यान देना चाहिए कि उनके पैकेजिंग ऐसी हो जो recycle हो सके। साफ-सफाई से जुड़ी संस्थाओं PWD, MCD, Residents' Welfare Association आदि की मॉनीटरिंग करने की जरूरत है।

स्वच्छता का एक मानवीय पक्ष भी है। एक व्यक्ति गंदा करते रहे और दूसरा व्यक्ति उसको साफ करता रहे और जो गंदगी फैलाये वो बड़ा और जो गंदगी साफ करने वाला नीच या छोटा है, यह मानसिकता बदलने की जरूरत है। गांधीजी जब 12 साल के थे तो उन्होंने पहली बार अपनी मां की आज्ञा मानने से इंकार कर दिया था क्योंकि उनके घर में जो शौचालय साफ करने आती थी उसके बेटे के साथ न खेलने को उनकी मां ने कहा था। बड़े होने पर गांधीजी जीवन भर अपना शौचालय खुद साफ करते रहे क्योंकि वे मानते थे कि मानव का मल मानव उठाये यह अमानवीयता है। कहने का मतलब यह है कि स्वच्छता को जब तक जीवन का

अंग नहीं बनाया जायेगा और साफ-सफाई करने वाले या मैला उठाने वालों के प्रति हमारा मानवीय दृष्टिकोण विकसित नहीं होगा, हम विकसित होकर भी पिछड़े ही रहेंगे।

इस प्रकार स्वच्छ भारत बनाने का सपना तभी पूरा होगा जब हर व्यक्ति स्वच्छता के प्रति जागरूक हो एवं भागीदार हो तथा गंदगी के प्रति शून्य सहिष्णुता (zero tolerance) अपनाए और इस की शुरुआत अपने घर से ही होती है। यह शरीर तथा परिवेश की अचूक मांग भी है जिसके माध्यम से न सिर्फ स्वस्थ जीवन जिया जा सकता है बल्कि बीमारियों से लड़ने पर देश भर में हो रहा अरबों का सालाना खर्च बचाया जा सकता है। स्वस्थ शरीर में निवसित स्वस्थ मस्तिष्क की उत्पादकता बढ़ने से देश की उत्पादकता जो बढ़ेगी, सो अलग ही है। स्वच्छ भारत के लक्ष्य को पूरा करके ही स्वस्थ भारत का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है एवं तभी हमारा देश विकास के नए कीर्तिमान गढ़ सकता है।

----जय हिन्द जय भारत--

पा



- किरण अय्यर वी,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक,
कस्टम हाऊस, कोचीन-9

जब भी कभी ममता की बात होती तब केवल नाम आता माँ का
पर क्या मोल लगा सका है कोई पिता के दुलार का ।
तपती धूप की हो झुलस या हो ठंड की कपकपी बच्चों के लिए इसने सब कुछ सहा
मन में रखी असंख्य पीड़ाएँ पर मुख से कुछ कुछ न कहा।



सारे दिन की मेहनत करती चूर चूर बदन
मेहनत करते-करते पता नही कहाँ गया इनका यौवन।
पापा जब भी शहर थे जाते
दो दो भारी बोरे भर कर सामान वो लाते
मुझे तो दिखते थे केवल मिठाई खिलौने
और हमारी खुशी मे कही गुम हो जाते उनके हाथों के फफोले

जिद का हमारे न होता था सिर पैर और रो-रो कर उठाते थे घर सर पर
क्या पा के माथे की शिकन पर कभी जाती थी हमारी नज़र ?
न जाने क्यों कभी कर बैठते थे तुलना पा की दूसरों से
हँसी और रोना आता है आज उस अजीब पागलपन पे।

चाहे भर पेट न खाया हो खाना कभी पर हमारी संतृप्ति पर ये खुश होते हैं।
अपना दर्द भूलकर पता नहीं इतनी सहनशीलता कहाँ से ये लाते हैं।
बातों-बातों में अपनी बचकानी हरकतों से हम कर देते हैं उनकी निंदा ।
पर क्या खुद संयमित रहते हैं हम जब अपनी होती निंदा ।

कितनी आसानी से हम बोल देते हैं छोड़ो पा कुछ नही आता आपको
पर हम बुद्धू क्या ये भूल गए कि ये जब हम मूक थे तब भी ये समझते थे हमको।
आज है इनका शरीर कमजोर, आवश्यकता है इन्हें हमारे सहारे की
ऐसे में क्या हमारा ये कर्तव्य नहीं के जिस कंधे पर चढ़ हम खेले
आज हमारी बारी आ गई है प्यार से उसे संभालने की ।

इतना व्यर्थ समय है मोबाईल इन्टरनेट में फूकने को
पर टाईम नहीं है दो पल का इनका हाल पूछने को।
हम भी जब बन जाएंगे पा तब ही शायद पाएंगे समझ
कि बच्चे के रूप में थे हम कितने थे नासमझ।
इन्हें कोई सरोकार नहीं हमारे धन दौलत से,
इनका मन भर जाता है बस प्यार भरे दो बोल से।

पीढ़ी दर पीढ़ी हम हो रहे हैं प्रैक्टिकल
पर क्या हम बदल पाएंगे अपना बीता कल।
आज हम यह मन से विचारें कि कल हम भी बनेंगे पा
और होंगे क्षीणकाय, अपना कार्य कर पाने में हम भी होंगे असहाय।
तब क्या हम अपना वो अपमान सह पाएंगे
अपने बलिदान क्या ये सिला हम पाएंगे ।

बूढ़े पिता न है हमपे बोझ ये तो है हमारें
लिए ज्ञान व अनुभवों से भरी तिजोरी।
इनकी बुढ़ापें की बनो लाठी और उनकी करो जी भर के रखवारी।
कल था इसने हमारा हाथ थामा तो हमारी बारी आज है
क्योंकि इनके आशीष से ही हमारा कल और आज है ।

सात सामाजिक पापकर्म

सिद्धान्त के बिना राजनीति

काम के बिना धन

विवेक के बिना सुख

चरित्र के बिना ज्ञान

नैतिकता के बिना व्यापार

मानवता के बिना विज्ञान

त्याग के बिना पूजा

- महात्मा गाँधी